ग्रीन रिवोल्ट
हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4

लोहरदगा का 27 नं. पुल झारखंड का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज

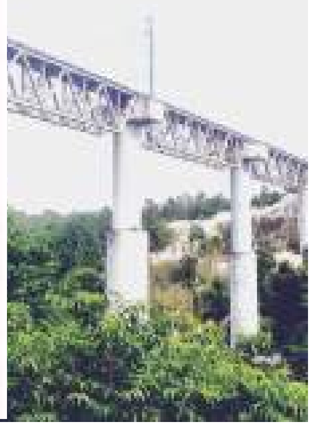

रविवारीय, 27 दिसंबर 2020 - 02 जनवरी 2021 वर्ष- दो, अंक-21, रांची, कुल पृष्ठ 4 हिन्दी साप्ताहिक R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 www.greenrevolt.news मूल्यः 5 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

नववर्ष की शुभकामनाएं

वर्ष 2020 हम सबों के लिये एक संघर्षों भरा साल रहा। इसे अपने जीवन के उबड़ खाबड़ रास्ते का एक हिस्सा मान कर हम सबों को निरंतर आगे की ओर देखना चाहिये।

नववर्ष में झारखंड से प्रकाशित एकमात्र पर्यावरणीय एवं कृषि आधारित आप सबों का यह साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र ग्रीन रिवोल्ट सदैव आपके कसौटियों पर खरा उतरेगा।

ग्रीन रिवोल्ट परिवार की ओर से आप सभी सुधि पाठकों को नववर्ष की ढेर सारी शुभकामनायें।

सिर्फ पर्यटन और कृषि से भी संवर सकता है झारखंड

मनोज कुमार शर्मा

जब झारखंड के पद्मश्री सम्मानित गायक, लेखक मधु मंसुरी हंसमुख गाते है....**गांव छोड़ब नाही, जंगल छोड़ब नाही** तब ऐसा लगता है कि कोई आम झारखंडी अपने खुबसूरत झारखंड को कभी नहीं छोड़ेगा। लेकिन झारखंड में पलायन बड़ी समस्या है। पढने से लेकर रोजगार के लिये देश भर के महानगरों में जाने की मजबूरी यहां दशकों से है। हालत यह है कि मानव तस्करी जैसे जघन्य अपराध को भी फलने फूलने का सामान झारखंड जैसे राज्य से ही मिलते रहा है। दिल्ली मुंबई जैसे महानगरों में घरेलु काम करने से लेकर फैक्ट्रियों में मजदूरी करते झारखंड के युवा मिल जायेंगे।

यह दुखद आश्चर्य की बात है कि जिस झारखंड से देश की कई महत्वपूर्ण जरूरतें पूरी होती है उसी झारखंड में पलायन एक बड़ी समस्या है। सिर्फ धान रोपाई के मौसम में ही यहां के सुदूर गावों में वापस लौटे लोगों से रौनक रहती है अन्यथा अन्य महिनों में मूल झारखंडी रोजी रोटी के लिये पलायन कर जाता है। बिहार से अलग होने से पहले झारखंड औद्योगिक इलाका था, आज भी है। लेकिन उद्योग धंधों से सभी झारखंडियों को रोजगार नहीं मिलता। वहीं खनिजों और कोयले के खनन से स्वयं राज्यवासियों को कितना लाभ मिला है? वह यहां से पलायन देखने पर शोध का विषय है।

प्रकृति ने झारखंड को सब कुछ दिया है। दुनिया भर के खनिजों के अलावा पर्यटन के लिये असीम संभावनायें और ऐसा मौसम वातावरण कि फूलों की खेती से लेकर यहां बागवानी, औषधीय पौधों की खेती सब कुछ प्रचुरता से हो सकता है । इसके बाद भी झारखंड का युवा रोजी रोटी के लिये पलायन कर जाता है।

एक बार योग गुरु बाबा रामदेव रांची आये थे तो उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि हमारे आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माण के लिये औषधीय पौधों और जड़ी बूटियों की बड़ी जरूरतें तो सिर्फ झारखंड से ही पूरी होती हैं। स्पष्ट है कि झारखंड में अभी औषधीय कृषि को और बढावा देने की जरूरत है।

राज्य के एक कृषि वैज्ञानिक ने ग्रीन रिवोल्ट को बताया था कि झारखंड का मौसम फूलों की खेती के लिये सबसे अनुकूल है। अगर यहां के लोग और सरकार इस क्षेत्र को प्रोत्साहन दें तो झारखंड फूलों के उत्पादन में अव्वल हो सकता है। जबकि आज भी यहां फूलों की आवक बंगाल से है। बहुत कम लोगों ने अब तक इस ओर ध्यान दिया है। कुछ साल पहले राज्य में स्ट्राबेरी की खेती प्रायोगिक तौर पर की गयी थी। उसका बेहतरीन रिजल्ट निकला। यहां पैदा हुयी स्ट्राबेरी की एक किस्म स्वाद में यूरोप के स्ट्राबेरी को भी मात दे रही है, पर आज तक उसकी व्यावसायिक खेती संभव नहीं पायी है। कुछेक गिने चुने लोगों ने ही इसका प्रयास किया है।

दरअसल झारखंड में जितनी प्राकृतिक संपदा, व्यावसायिक खेती के लिये अनुकूल मौसम उपलब्ध है उसका समुचित दोहन अब तक नहीं किया जा सका है। तकरीबन 28 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि में सिर्फ एकफसली धान की खेती होती है। जब कि इसी झारखंड में कभी चाय की भी खेती होती थी।

पर्यटन के मानचित्र पर छा सकता है झारखंड

1989 में तत्कालीन कृषि मंत्री चौधरी देवीलाल झारखंड के दौरे पर थे। इस दरम्यान उन्होंने झारखंड के जंगलों, पहाड़ों, नदियों झरनों को देखा और मंत्रमुग्ध हो गये। तब बिहार था और देवीलाल झारखंड के इलाके से अनभिज्ञ थे। उन्हें लगा था के इधर भी बिहार के जैसे ही मैदानी इलाके होंगे? चौधरी देवी लाल ने झारखंड की खुबसूरती को देखा और उनके मुंह से यही बात निकली कि..... बिहार का यह इलाका इतना सुंदर है और कमाल है कि यह पर्यटन के मानचित्र पर नहीं है और पिछड़ा हुआ है ?हरियाणा में अगर ये सब होता तो हम इसे एक उद्योग के रूप में विकसित कर चुके होते?

आज झारखंड राज्य बने दो दशक हो चुके हैं, पर पर्यटन के मानचित्र पर हम बहुत पिछड़े हुये हैं। जबकि राज्य में खुबसूरत प्राकृतिक दृश्यों की भरमार है। पर्यावरणविद् और भूगर्भशास्त्री नितिश प्रियदर्शी का कहना है कि झारखंड का इलाका हिमालय से भी पुराना है और यहां इतनी प्रागैतिहासिक चट्टानें और पुरातात्विक महत्व की चीजें हैं कि उन पर शोध हों तो अप्रत्याशित तथ्य निकल कर आयेंगे, लेकिन वो सब यूं ही बर्बाद हो रहे हैं।

सिर्फ कानून व्यवस्था में सुधार रोड ,रेल नेटवर्क दुरूस्त हो जाये तो पर्यटन औश्र कृषि के बाद झारखंड में किसी बड़े प्रदूषक उद्योग धंधों की कोई आवश्यकता ही नहीं होगी?

राज्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यो को बढ़ावा मिलेगा : बादल पत्रलेख

रांचीः भारतीय प्राकृतिक रोल एवं गोंद संस्थान रांची तथा कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) व कृषि विभाग, चतरा के सौजन्य से अनूसूचित जाति के किसानों के बीच कृषि उपयोगी यंत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. चतरा स्थित केवीके परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने अनूसूचित जाति किसानों के बीच 50 वर्मी पिट, 50 स्प्रयैर एवं 50 कृषि किट का वितरण किया. जिला मत्स्य विभाग के सौजन्य से तीन किसानों को एक झ एक लाख का अनुदान वितरित किया गया. जिला कृषि विभाग के सौजन्य से गंगाजीत गाँव के किसान मुकलेश कुमार सिंह को 50 प्रतिशत अनुदान पर मिनी राइस हॉलर को बाँटा.

जिले के कृषि विकास में केवीके का कार्य सराहनीय : सत्यानन्द भोक्ता

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने इस तरह के कार्यक्रम राज्य के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों किये जाने की आशा जताई. राज्य में कृषि विस्तारीकरण गतिविधियों में केवीके को बढ़ावा देने की बात कही. कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विश्वविद्यालय में रिक्त पदों पर बहाली जल्द ही पूरी हो जाएगी. इसकी तैयारी की जा रही है. उन्होंने कहा कि जिले में अधूरे पड़े एग्रो टूरिज्म पार्क को पूरा करने, भेडी फार्म को मजबूत करने का प्रयास तथा डेयरी फार्म की स्थापना की जाएगी. उन्होंने केवीके में स्थापित मिट्टी जाँच प्रयोगशाला के कार्यो को सराहा तथा इसीतरह अन्य केवीके में मिट्टी जाँच प्रयोगशाला को कार्यशील किये जाने की जरूरत बताया.

मौके पर विशिष्ठ अतिथि नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास मंत्री सत्यानन्द भोक्ता ने जिले में कृषि विकास को गति देने में केवीके,चतरा के वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की. उन्होंने कहा कि जिले में कृषि क्षेत्र में काफी अवसर है और जिले के किसानों को कृषि मंत्री से काफी अपेक्षाएं है। उपायुक्त दिव्यांशू झा ने कहा कि जिले के किसान काफी मेहनती है. इन्हें प्रोत्साहित कर कृषि क्षेत्र की दिशा और दशा को नई राह दिखाने की आवश्यकता है. कार्यक्रम में आईआईएनआरजी वैज्ञानिक डॉ निर्मल कुमार तथा केवीके प्रभारी डॉ रंजय कुमार सिंह ने भी अपने विचारों को रखा. मौके पर डॉ बीपी रॉय, उपेन्द्र कुमार सिंह, जुनैद आलम. एसके दूबे, अभिजित घोष, रवि कुमार, नेपाल ठाकुर, बसंत ठाकुर, जयराम सिंह, लालमणि ठाकुर, एवं रूपलाल भोक्ता सहित सैकड़ो की संख्या में किसान मौजूद थे।

छोटी रंगीन मछलियों का प्रजनन-एक लाभकारी व्यवसाय

आशीष कुमार

आप घरो या व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में अक्सर शीशे के एक्वेरियम में रंगीन मछलियों को देखे होंगे। क्या आपको मालूम है ये सभी रंगीन मछलियां बाहर से मंगाई जाती हैं। इस व्यवसाय में मुख्य रूप से कोलकाता के निकट हावड़ा के आसपास कई मछली पालक हैं जो प्रचूर संख्या में रंगीन मछलियों का प्रजनन करा कर उन्हें देश के लगभग सभी हिस्सों में भेजते हैं।

यद्यपि मछलियों का प्रजनन थोड़ा कठिन है फिर भी कुछ छोटी मछलियां ऐसी है जो सीधे बच्चा पैदा करते हैं। उनका रखरखाव भी आसान है इसलिए स्थानीय स्तर पर उनका प्रजनन करा कर उन मछलियों को बाजार में भेजा जा सकता है। इनमें मुख्य रूप से चार मछलियां जैसे गप्पी, रेड मौली, ब्लैक मौली और स्वॉर्ड टेल आती हैं। इनका प्रजनन अपने आप होता है केवल प्रजनन के उपरांत बीज को अलग करना पड़ता है जिससे उनकी वृद्धि की जा सके। गप्पी मछली की कई प्रजातियां हैं जो बहुत ही लोकप्रिय हैं। एक प्रजाति जिसे रेनबो गप्पी कहा जाता है वह बहुत ही ज्यादा मांग में रहती है क्योंकि शरीर के अनुपात में उसका पिछला पंख बहुत ही बड़ा और कई रंगों का होता है। इनके अतिरिक्त यदि थोड़ा मेहनत किया जाए तो गोल्डफिश का भी प्रजनन सफलतापूर्वक कराया जा सकता है। लगभग सभी एक्वेरियम रखने वाले शौकीन लोग निश्चित रूप से गोल्डफिश रखते हैं इसलिए गोल्डफिश की मांग हमेशा बनी रहती हैं।

सरकार के मत्स्य विभाग के द्वारा रंगीन मछलियों के प्रजनन और रखरखाव के लिए न केवल प्रशिक्षण की व्यवस्था है बल्कि फाइबर टब, एयरेटर इत्यादि भी अनुदान पर उपलब्ध कराया जाता है। बड़े शहरों के निकट के गांव की महिलाएं या स्वयं सहायता समूह के सदस्य इसमें अभिरुचि लेकर यदि रंगीन मछलियों का प्रजनन का कार्य प्रारंभ करें तो उन्हें अतिरिक्त आमदनी होगी और बाहर से मछली के आपूर्ति पर निर्भरता कम होगी। रंगीन मछली का व्यापार एक बहुत ही बड़ा व्यापार है जिसे अपनाकर अपने आय में वृद्धि की जा सकती है।

लेखक सेवानिवृत उपनिदेशक (मत्स्य विभाग) हैं

Ph. 9430783037
email:coomar2012@gmail.com

पांच राज्यों में बच्चों की जान लील रहा है वायु प्रदूषण

लैंसेट प्लेटनरी हेल्थ रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और राजस्थान पांच राज्य हैं जहां अकेले 50 फीसदी मौते हुई हैं। यही पांचो राज्य 2017 की रिपोर्ट में भी शीर्ष मौत वाले राज्यों की सूची में शामिल थे।

2019 की रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण जनित मौतें 349, 000 उत्तर प्रदेश में हुई है। हालांकि अभी यह स्पष्ट कर पाना मुश्किल है कि इस रिपोर्ट में पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की संख्या वास्तविकता में कितनी है। लेकिन रिपोर्ट से यह स्पष्ट है कि बड़ी संख्या पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की है। वायु प्रदूषण जनित रोगों में निचले फेफड़ों के संक्रमण सबसे ज्यादा बच्चों की मौत का कारण बनते हैं। पुरानी जीबीडी रिपोर्ट के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है।

यदि 1990 से लेकर 2017 तक दो दशक में पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की प्रमुख बीमारियों से होने वाले मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण करें तो यह साफ पता चलता है कि जिस तरह से डायरिया, खसरा जैसे रोगों पर नियंत्रण पाया गया है उस गति में निचले फेफड़ों के संक्रमण से मौतों पर नियंत्रण की कोशिश नहीं हुई है। मसलन 1990 में पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की डायरिया से 16.73 फीसदी (4.69 लाख मौतें) हुई थीं जबकि 2017 में नियंत्रण से यह 9.91 फीसदी (एक लाख) पहुंच गईं। वहीं, निचले फेफड़ों के संक्रमण से 1990 में 20.20 फीसदी (5.66 लाख मौतें) हुईं थी जो कि 2017 में 17.9 फीसदी (1.85 लाख) तक ही पहुंची। यानी करीब तीन दशक में एलआरआई से मौतों की फीसदी में गिरावट बेहद मामूली है। पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की मौत का प्रमुख कारण क्या है? इस सवाल के जबाव में 1990 से 2017 तक के जीबीडी आंकड़ों का विश्लेषण यह बताता है कि पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की मौत का दूसरा सबसे प्रबल कारक निचले फेफड़ों का संक्रमण है। वहीं, निचले फेफड़ों के संक्रमण में वायु प्रदूषण की बड़ी भूमिका है।

विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि पार्टिकुलेट मैटर 2.5 प्रदूषण के वो कण हैं जो आंखों से दिखाई नहीं देते और इतने महीन होते हैं कि श्वास नली के जरिए निचले फेफड़े तक पहुंच जाते हैं। सिर्फ बच्चों में ही यह प्रदूषण कण इसलिए भी ज्यादा प्रभावी होते हैं क्योंकि बच्चे किसी वयस्क के मुकाबले ज्यादा सांस के दौरान ज्यादा प्रदूषण कण भी अपने फेफडों तक पहुंचाते हैं।

जीबीडी के ही आंकड़ों के मुताबिक पांच वर्ष से कम उम्र आयु वर्ग में अब भी अपरिपक्वता, समयपूर्व जन्म, कम वजन का होना, स्वास्थ्य सुविधाओं का न होना जैसे नवजात विकारों के कारण दम तोड़ देते हैं। 28 दिन की उम्र से नीचे यानी नवजात बच्चों की मृत्यु में भी यह कारक प्रमुख हैं। लेकिन जो इस स्टेज को पार कर जाते हैं और पांच वर्ष से छोटे हैं उनमें निचले फेफड़े का संक्रमण होने का जोखिम सबसे ज्यादा है और इसी आयु वर्ग के बच्चे निचले फेफड़े के संक्रमण से दम तोड़ रहे हैं।

गंभीर संकट में हैं भूजल और नदियों का जुड़ाव

गंगा बेसिन में निरंतर और दीर्घकालिक भूजल दोहन से शुष्क मौसम आधार प्रवाह (लीन सीजन बेस फ्लो) में तेजी से कमी आई है

डॉ. वेंकटेश दत्ता

जलीय पारिस्थितिक तंत्र और मानव आजीविका को बनाए रखने के लिए प्रकृति और समाज भूजल पर निर्भर करता है। लेकिन जहां जल निष्कर्षण, जलीय पुनर्भरण से अधिक है, वहां स्थानीय और क्षेत्रीय भूजल आपूर्ति घट रही है। दुनिया भर में, 90% पानी का उपयोग सिंचाई में होता है और वैश्विक भूजल स्त्रोतों से 545 किमी3 वार्षिक पानी की पंपिंग होती है। दुनिया के कुछ महत्वपूर्ण जलक्षेत्रों में भूजल पम्पिंग वांछनीय स्तर से अधिक है। इसका एक सीधा प्रभाव नदी के प्रवाह में तेजी से गिरावट है।

पानी की बढ़ती मांग के कारण उत्तरी भारत में भूजल निष्कर्षण हाल ही में पुनः प्रयोज्य भूजल (फिर से भरने योग्य भूजल) से अधिक हो गया है, जिससे जल स्तर में लगातार कमी आ रही है। केंद्रीय भूजल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) और अन्य देशों के भूजल विभाग 1990 के दशक के दौरान गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु बेसिन के अंदर भारत, नेपाल और बांग्लादेश में भूजल निष्कर्षण की कुल दर का अनुमान ~172 किमी 3 लगाते हैं। इसके अलावा, पिछले कुछ वर्षों में निष्कर्षण दरों में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है और यह संभावना है कि हाल की दरें बहुत अधिक हैं। सीजीडब्ल्यूबी का अनुमान है कि गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु बेसिन के जलग्रहण क्षेत्र में अधिकतम संभावित भूजल पुनर्भरण 246 किमी3/वर्ष है; मानसून के मौसम में इससे नीचे की निकासी दर को रिचार्ज द्वारा ऑफसेट किया जाता है। ग्रेस (GRACE) - माइनस मॉडल इंगित करता है कि भूजल निकासी की वर्तमान दर अधिकतम संभावित भूजल पुनर्भरण से अधिक है। कृषि विकास और औद्योगिकीकरण बढ़ने के साथ आने वाले वर्षों में भूजल की मांग कई गुना बढ़ जाएगी।

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि सभी नदियों के आधार प्रवाह को बनाए रखने में भूजल का महत्वपूर्ण योगदान है। भूजल की क्रमिक कमी निश्चित रूप से गंगा में पानी की मात्रा और प्रवाह कम करने में योगदान दे रही है। गंगा में बेस फ्लो की मात्रा 1970 के दशक की सिंचाई पंपिंग की शुरुआत से लगभग 60 प्रतिशत कम हो गई है। गंगा के जलभृत से सटे भूजल भंडारण में भी प्रति वर्ष लगभग 30 से 40 सेमी की कमी आई है। नदी के प्रवाह पर भूजल स्तर में गिरावट का प्रभाव गंगा की कई अन्य सहायक नदियों पर देखा जा सकता है, जिन्हें बर्फ के पिघलने से कोई पानी नहीं मिल रहा है। यह नदी के पानी पर भूजल की कमी के प्रभाव को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

गंगा, दुनिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक है, जिसके विस्तृत मैदानों ने पिछले तीन हजार वर्षों से अधिक समय तक भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बनाए रखा है। भारत में गंगा बेसिन का क्षेत्र प्त 8.6 . 105 किमी2 है और वर्तमान में सबसे बड़ी और घनी वैश्विक आबादी (वैश्विक जनसंख्या का 10%) को समायोजित किया है। भूजल की अवैज्ञानिक निकासी से वैश्विक खाद्य उत्पादन को खतरा हो सकता है। जल-स्तर की गिरावट के प्रभावों को व्यापक रूप से सूचित किया गया है। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि भूजल में गिरावट सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिणामों की एक विस्तृत श्रृंखला को जन्म दे सकता है, जिसमें शामिल हैं: निकटवर्ती एक्वीफर सिस्टम से भूजल प्रवाह के पैटर्न में महत्वपूर्ण परिवर्तन; पारिस्थितिक तंत्रों और डाउनस्ट्रीम उपयोगकर्ताओं को परिणामी क्षति के साथ स्ट्रीम बेस फ्लो, वेटलैंड्स आदि में गिरावट; पम्पिंग लागत और ऊर्जा उपयोग में वृद्धि; भूमि अवसंरचना और सतह के बुनियादी ढांचे को नुकसान; पीने, सिंचाई और अन्य उपयोगों के लिए विशेष रूप से गरीबों के लिए पानी की कमी।

हमने क्या सीखा साल 2020 से ?

वैश्विक महामारी कोरोना से दुनिया को तबाह करने वाला साल 2020 अब जा रहा है। हालांकि कोविड-19 का आगमन तो साल 2019 के दिसंबर में ही हो गया था , पर दुनिया इसके विभीषिका से तबाह साल 2020 सें रही है। अब ऐसा भी नहीं कि यह साल खत्म होने से महामारी संकट भी खत्म होगा। लेकिन वैक्सिन बनने और लोगों तक इसके पहुंचने से एक उम्मीद तो जग ही रही है कि संभवतः साल 2021 में कोविड-19 पर नियंत्रण पाया जा सकेगा।

साल तो खत्म हो रहा है, पर इसने पूरे मानव जाति को एक बड़ी चेतावनी भी दी है। अब ये हम मनुष्यों पर निर्भर करता है कि हम इससे कोई सबक लें और आगे सतर्क रहें। यह तो तय है कि कोरोना महामारी मानव जनित ही है यह कोई पुरानी महामारी नहीं थी। अब तक के तथ्यों से यही माना गया है कि चीन के लोगों के तरह-तरह के जानवरों, पशु पक्षियों के मांस के खान पान के कारण ही इसका फैलाव मनुष्यों में हुआ और यह विश्वव्यापी हो गया। इस महामारी ने जितना नुकसान किया है उससे विश्व की आर्थिक स्थिति चरमरा गयी, शिक्षण व्यवस्था ध्वस्त हो गयी, हरेक प्रकार के व्यवसाय को भारी चोट पहुंची है। यह सब किसी युद्ध से नहीं बल्कि मनुष्य जनित महामारी से हुआ। अंततः प्रकृति हमें यह जता गयी कि उसके साथ खिलवाड़ कितना घातक है और वह किस प्रकार से बदला लेती है। इस महामारी के माध्यम से प्रकृति ने यह भी बता दिया कि अगर हम नहीं सुधरे धरती का दोहन ऐसे ही करते रहे, खान पान में ऐसी ही राक्षसी सोच रही, पर्यावरण को बिगाड़ते रहे तो वह स्वयं एक झटके में ही सब कुछ नियंत्रित कर कर लेती है।

> 2020 विश्व के लिये त्रासदियों वाला साल रहा। भारत ने भी सैकड़ो सेलिब्रेटी से लेकर कई दिग्गज नेताओ, कलाकारों, चिंतकों विचारकों को खोया है। कोरोना ने देश की अर्थव्यवस्था के साथ इस उत्सवजीवी देश में बहुत कुछ लील लिया। करोड़ो लोग साल 2020 को मनहुस और अपशकुनों वाला मान रहे हैं और मन:स्थिति ऐसी बन गयी है कि यह साल खत्म होगा और साल 2021 आयेगा तो स्वत: सारी चीजें ठीक हो जायेंगी ? लेकिन सत्य तो यही है कि महज कैलेंडर और साल के बदलने से महामारी और त्रासदियों पर कोई फर्क नहीं पड़ता।
>
> साल 2020 हमें बहुत सारी पीड़ा देने के साथ ही यह भी जता गया है कि हम मनुष्यों को सुख सुविधा और भोगवादी चक्कर में अपनी सीमायें नहीं लांघनी चाहिये। चीन की इसी भोगवादी और किसी भी जीव जंतुओं को खाने पकाने की राक्षसी प्रवृत्ति की सजा आज पूरा विश्व भुगत रहा है। शायद मानव जाति इससे कुछ सीख ले ?

दो दशकों में खतरनाक स्तर पर पहुंच जाएगी तापमान में हो रही वृद्धि

नए अनुमान से पता चला है कि तापमान में हो रही वृद्धि 2027 से 2042 के बीच 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर जाएगी। हाल ही में छपे एक शोध से पता चला है कि वैश्विक तापमान में हो रही वृद्धि 2027 से 2042 के बीच खतरनाक स्तर पर पहुंच जाएगी। हालांकि इससे पहले आईपीसीसी ने इसके 2052 तक चरम पर पहुंचने का अनुमान लगाया था। यदि इस शोध को देखें तो इसमें आईपीसीसी की तुलना में तापमान की वृद्धि के बारे में ज्यादा सटीक अनुमान लगाने का प्रयास किया गया है। मैकगिल यूनिवर्सिटी द्वारा किया यह शोध जर्नल क्लाइमेट डायनेमिक्स में प्रकाशित हुआ है।

इसे समझने के लिए शोधकर्ताओं ने एक नया तरीका खोजा है, उनका मानना है कि इस नए मॉडल की मदद से तापमान की ज्यादा सटीकता से गणना की जा सकती है। यह नया मॉडल जलवायु के ऐतिहासिक आंकड़ों पर आधारित है। शोधकर्ताओं का मानना है कि यह मॉडल पुराने दृष्टिकोणों की तुलना में अनिश्चितताओं को कम कर सकता है। तापमान में होने वाली वृद्धि को जानने के लिए दशकों से वैज्ञानिक जलवायु मॉडल का उपयोग करते आए हैं। ये मॉडल पृथ्वी की जलवायु को समझने और उनमें आ रहे बदलावों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन वे कितने सटीक हैं, इस पर अभी भी बहस जारी है।

इसके बावजूद जब भविष्य के बारे में अनुमान लगाने की बात आती है, तो अनिश्चितता बनी रहती है।शोध के अनुसार अब तक जिस तरह से तापमान बढ़ने के बारे में अनगिनत अनुमान लगाए गए हैं उसने अलग- अलग जलवायु शमन परिदृश्यों में सही अनुमान को और मुश्किल बना दिया है। यह तापमान की एक विस्तृत रेंज है। जिसमें निचले स्तर पर मध्यम जलवायु परिवर्तन से लेकर उच्चतम स्तर पर तापमान में प्रलयंकारी वृद्धि होने का अनुमान लगाया गया है।

जलवायु परिवर्तन से बढ़ी प्राकृतिक आपदायें

संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि पिछले 20 वर्षों (2000-2019) से हो रही प्राकृतिक आपदाओं के लिए बहुत हद तक जलवायु परिवर्तन जिम्मेदार है। यूनाइटेड नेशंस ऑफिस फॉर डिजास्टर रिस्क रिडक्शन के अनुसार पिछले दो दशकों के दौरान दुनिया भर में 7,348 प्रमुख आपदाओं की घटनाएं हुईं। इन घटनाओं में लगभग 12.3 लाख (1.23 मिलियन) लोग मारे गए, 420 करोड़ लोग प्रभावित हुए और वैश्विक अर्थव्यवस्था को लगभग 2.97 ट्रिलियन डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ। इसमें एशियाई देश सर्वाधिक प्रभावित हुए।

रिपोर्ट में कहा गया है कि 2019 में वैश्विक औसत तापमान पूर्व-औद्योगिक अवधि के मुकाबले 1.1 डिग्री सेल्सियस अधिक था। बढ़ता तापमान जलवायु संबंधी आपदाओं में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है, जिसमें बाढ़, सूखा, तूफान और जंगल की आग सहित चरम मौसम की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। साथ ही अत्यधिक गर्मी विशेष रूप से घातक साबित हो रही है।

नहीं हो पाया सुधारों का 'उदय', बीते चार सालों में 32 प्रतिशत बढ़ी बिजली सब्सिडी

राज्य सरकारों द्वारा बिजली दरों पर दी जाने वाली प्रत्यक्ष सब्सिडी में वित्तीय वर्ष 2016 से अब तक 32 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और वित्तीय वर्ष 2019 में यह बढ़कर 110391 करोड़ रुपये (15 अरब डॉलर) हो गयी है। इससे जाहिर होता है कि बिजली वितरण कम्पनियों (डिस्कॉम्स) में सुधारात्मक कदमों का कोई खास नतीजा नहीं मिला है। 'अनपैकिंग इंडियाज इलेक्ट्रिसिटी सब्सिडीज' विषयक एक ताजा रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। रिपोर्ट में लगाये गये अनुमान के मुताबिक कुछ उपभोक्ताओं को लागत से भी कम दर पर बिजली देने से होने वाले नुकसान की भरपाई के लिये कुछ उपभोक्ताओं को ऊंची दर पर बिजली उपलब्ध कराने के लिये 'क्रॉस सब्सिडीज' के तहत पर वित्तीय वर्ष 2019 में कम से कम 75027 करोड़ रुपये अतिरिक्त खर्च किये गये। इससे सब्सिडी पर होने वाला कुल खर्च कम से कम 185418 करोड़ रुपये (25.2 अरब डॉलर) हो गया।

बिजली पर बढ़ती सब्सिडी इस बात की निशानी है कि उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना (उदय) के लिहाज से विद्युत वितरण कंपनियों (डिस्कॉम्स) का प्रदर्शन बहुत खराब है। उदय केंद्र सरकार द्वारा संचालित एक बेलआउट योजना है, जिसके तहत वर्ष 2019 में डिस्कॉम्स से अपने वित्तीय प्रदर्शन को सुधारने की अपेक्षा की जाती है। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (आईआईएसडी) और काउंसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वॉटर (सीपीडब्ल्यू) के अध्ययन के मुताबिक भारत के 31 में से 25 राज्य उदय योजना के तहत अपनी कुल तकनीकी और वित्तीय हानियों को घटाकर 15% तक लाने में नाकाम रहे हैं। इसके अलावा वित्तीय वर्ष 2016 से सभी बिजली वितरण कंपनियों का बिक्री राजस्व भी 3% तक गिरा है, जबकि 31 में से 24 राज्यों में वर्ष 2019 में राजस्व का अंतर भी पाया गया। बिजली पर सब्सिडी देने वाले 26 राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में से कोई भी बिजली दरों पर सब्सिडी दिए जाने के मामले में नेशनल टैरिफ पॉलिसी के नियमों का पालन नहीं कर सका। विशेषज्ञों का मानना है कि यह एक दुष्चक्र है। खराब वित्तीय प्रदर्शन के कारण बिजली सब्सिडी पर निर्भरता बढ़ती है और खराब तरीके से सब्सिडी का आकलन किए जाने से वित्तीय व्यवस्था और भी खराब होती है।

काउंसिल ऑन एनर्जी इन्वायरमेंट एंड वॉटर के प्रोग्राम एसोसिएट प्रतीक अग्रवाल ने कहा ''यह एक गंभीर समस्या है। अगर डिस्कॉम अपनी लागतों की वसूली नहीं कर सकते हैं तो भी उपभोक्ताओं को दूसरे रास्तों से इसकी कीमत चुकानी होगी। भारत में हमें बिजली की खराब विश्वसनीयता और गुणवत्ता मिलती है। शोधकर्ताओं ने इन चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझने के लिए भारत के विभिन्न राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में बिजली सब्सिडी के डिजाइन की पड़ताल की। उन्होंने पाया कि राष्ट्रीय स्तर पर कृषि उपभोक्ताओं को सरकार द्वारा समर्थित बिजली का 75% हिस्सा उपलब्ध कराया जाता है।

प्रतीक अग्रवाल ने कहा ''हालांकि यह किसानों की मदद के लिहाज से महत्वपूर्ण है, लेकिन किसानों को कुल सब्सिडी का बड़ा हिस्सा दिया जाना कोई उदारता नहीं, बल्कि दक्षता के स्तर पर खराबी को जाहिर करता है। ज्यादातर राज्य, खासकर कम आमदनी वाले किसानों को फायदा देने को अपना लक्ष्य नहीं बनाते और ग्रामीण इलाकों में अनमीटर्ड बिजली उपभोग की सामान्य स्थिति का यह मतलब है कि सब्सिडीशुदा उपभोग की कोई अपर लिमिट तय नहीं की गई है। उन्होंने कहा '' उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में कुल राजस्व का करीब 1.5 प्रतिशत हिस्सा ही बिलिंग और कलेक्शन पर खर्च किया जाता है। बिल देने जाने वाले कर्मियों पर जबर्दस्त दबाव है। सरकार इन खामियों से निपट नहीं पा रही है। इस पर काफी कुछ निर्भर करता है। प्रतीक ने कहा कि कोविड काल में मांग सर्वकालिक निचले स्तर पर पहुंच गयी, जिससे डिस्कॉम्स की हालत और खराब हो गयी। इससे उबरने के लिये उन्हें टैरिफ ढांचे पर ध्यान देना होगा। यूपी की मिसाल लें तो वहां फिक्स और वेरियेबल चार्जेस में काफी अंतर है। इसे दूर करने की जरूरत है। सरकार को मूल्य श्रंखला में सततता लानी होगी।

इस रिपोर्ट में घरेलू उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सब्सिडी की डिजाइन से संबंधित समस्याओं की भी पहचान की गई है। ज्यादातर राज्यों में घरेलू उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सब्सिडी अनकैप्ड है और उपभोग बढ़ने की वजह से डिस्कॉम की वित्तीय व्यवहार्यता पर विनाशकारी प्रभाव पड़ सकते हैं। रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि सब्सिडी में पारदर्शिता के स्तर पर और भी सुधार की गुंजाइश है।

रिपोर्ट में ऊर्जा मंत्रालय,राज्य सरकारों, डिस्कॉम्स, राज्य तथा केन्द्र के बिजली नियामक आयोगों तथा नियामकों के फोरम को डेटा रिपोर्टिंग को बेहतर बनाने और नीति निर्धारकों की मदद के लिये मिलकर काम करने की सिफारिश की गयी है। अंजलि विश्वमोहनन ने कहा ''सब्सिडी के आवंटन की सूचनाओं को जाहिर करने कि कोई समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण ज्यादातर मामलों में केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की प्रभावशीलता का अंदाजा लगाना नामुमकिन होता है। विशेषज्ञों का मानना है कि हालात और खराब होंगे, क्योंकि बिजली वितरण कंपनियां कोविड-19 के कारण हुए अतिरिक्त नुकसान से निपटने की जुगत में लगी हैं। अंजलि ने कहा ''बिजली दरों में बढ़ोत्तरी और वित्तीय बेलआउट विकल्प, दोनों ही सीमित हैं, क्योंकि उपभोक्ता और सरकार कोविड-19 के खिलाफ जारी लड़ाई के कारण नकदी की कमी से जूझ रहे हैं। सब्सिडी देने वालों में से कोई भी परिपूर्ण नहीं है लेकिन अनेक उदाहरण भी हैं। पंजाब अपने यहां दी जाने वाली बिजली सब्सिडी की सूचना देने तथा सब्सिडी देने में विलंब के कारण लगने वाले जुर्माने को लेकर खासी पारदर्शिता दिखाता है। वहीं, नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश ने अपने-अपने यहां प्रत्यक्ष सब्सिडी पर कुल निर्भरता में कमी हासिल की है।

विशेषज्ञों ने इस बात की पुरजोर वकालत की है कि बिजली सब्सिडी का बेहतर तरीके से लक्ष्य तय किया जाना चाहिए और यह समस्या समाधान का एक हिस्सा होना चाहिए। बेहतर लक्ष्य तय किए जाने से कुल खर्च में कटौती की जा सकती है। पिछले साल 24 में से 12 राज्यों ने अपने-अपने यहां बिजली सब्सिडी में इजाफा किया है। आईआईएसडी में एनर्जी विशेषज्ञ श्रुति शर्मा ने कहा ''सबसे पहले तो सब्सिडी देने में पारदर्शिता को बढ़ाना चाहिए और सब्सिडी संबंधी सूचनाओं को साझा करने की समुचित व्यवस्था बनाई जानी चाहिए। बिजली दर तथा सब्सिडी डिजाइन से संबंधित प्रभावी नीति बनाए जाने के लिए सब्सिडी आवंटन को लेकर स्पष्टता बेहद जरूरी है।

श्रुति ने कहा ''सभी को बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सब्सिडी की अहम भूमिका है लेकिन अगर उनकी दिशा सही नहीं हो, तो बिजली वितरण कंपनियों को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। आखिरकार इसका असर सभी उपभोक्ताओं को मिलने वाली बिजली की विश्वसनीयता और गुणवत्ता पर पड़ता है। देश में बिजली वितरण कंपनियों की वित्तीय हालत में सुधार के लिए तुरंत कदम उठाने की जरूरत है।

द्वारा : क्लाइमेट कहानी

बड़े भूकंप ला सकता है आर्कटिक का बढ़ता तापमान

एजेंसियां

वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया कि अचानक तापमान में बदलाव भू-गर्भकालीन कारकों को बढ़ा देता है, जिससे विनाशकारी भूकंप आने के आसार बढ़ जाते हैं।

महासागरों में भू-गर्भिक प्लेटों के खिसकने से भूकंप आते हैं। अब रूस के मास्को इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स एंड टेक्नोलॉजी (एमआईपीटी) के शोधकर्ता ने आर्कटिक के तेजी से गर्म होने की वजह से बार-बार और भयंकर भूकंप आने के बारे में बताया है। ग्लोबल वार्मिंग को इसकी एक मुख्य वजह बताया गया है। ग्लोबल वार्मिंग के लिए अधिकतर मानव गतिविधि को जिम्मेवार माना गया है, जो वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों को बढ़ाता है। हालांकि यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट नहीं करता है कि तापमान कभी-कभी अचानक क्यों बढ़ जाता है।

आर्कटिक में जलवायु को गर्म करने वाले कारकों में से एक पर्माफ्रोस्ट और शेल्फ जोन से मीथेन निकलना है। चूंकि अब शोधकर्ताओं ने आर्कटिक में तापमान की निगरानी करना शुरू कर दिया है, इस क्षेत्र में दो समय पर अचानक गर्मी देखी गई है, पहली बार 1920, जो कि 30 के दशक में था और फिर 1980 में शुरू हुआ और यह आज भी जारी है।

अपने शोध में वैज्ञानिक ने अनुमान लगाया कि अचानक तापमान में बदलाव भू-गर्भकालीन कारकों को बढ़ा देता है। विशेष रूप से, उन्होंने अलेउतियन द्वीप में आए विनाश-ाकारी भूकंपों की एक श्रृंखला की ओर इशारा किया, जो आर्क-टिक के सबसे नजदीकी क्षेत्र में सक्रिय हैं। यह अध्ययन लिओपोल्ड लोबकोवस्की के द्वारा किया गया हैं, लोबकोवस्की विश्व महासागर के आर्कटिक और कॉन्टिनेंटल मार्जिन के भूभौतिकीय अनुसंधान में एमआईपीटी प्रयोगशाला के प्रमुख हैं।

अपनी परिकल्पना की जांच करने के लिए, लोबकोवस्की को तीन सवालों का जवाब देना था। सबसे पहले, जब भयंकर भूकंप आए उस दिन तापमान बढ़ा था या नहीं क्या ये इस विचार के साथ मेल खाता हैं ? दूसरा, वह कौन सा तंत्र है जो अलेउतियन द्वीप से आर्कटिक के क्षेत्र में 2,000 से अधिक किलोमीटर तक फैलाने के लिए स्थलमंडल (लिथोस्फेरिक) गड़बड़ी से यह हो रहा है ? तीसरा, इन गड़बड़ियों से मीथेन उत्सर्जन कैसे तेजी से होती है ?

पहले प्रश्न का उत्तर ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण से मिला। यह पता चला है कि अलेउतियन आर्क वास्तव में 20 वीं शताब्दी में आए भयंकर भूकंपों की दो श्रृंखलाओं का स्थान था। उनमें से प्रत्येक में लगभग 15 से 20 वर्षों तक तापमान में अचानक वृद्धि देखी गई।

उन्होंने दूसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए लिथोस्फेरिक एक्साइटैशन डाइनैमिक्स का एक मॉडल लिया। शोधकर्ता द्वारा प्रयुक्त मॉडल तथाकथित टेक्टोनिक तरंगों के प्रसार के बारे में बताता है और पूर्वानुमान लगाता है कि इनके द्वारा प्रति वर्ष लगभग 100 किलोमीटर की यात्रा की जानी चाहिए। यह प्रत्येक भयंकर भूकंप श्रृंखला और उसके बाद के तापमान में वृद्धि के बीच होने वाली देरी से है, क्योंकि इस गड़बड़ी ने 2,000 किलोमीटर से अधिक यात्रा तय करने में 15 से 20 साल लग गए। यह अध्ययन जियोसाइंस नामक पत्रिका में प्र-काशित किए गए हैं।

तीसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए शोधकर्ता ने आर्कटिक के क्षेत्र में आने वाली विरूपण तरंगें लिथोस्फीयर में मामूली सा अतिरिक्त तनाव के कारण यह बनता हैं, जो मेटास्टेबल गैस हाइड्रेट्स और पर्माफ्रोस्ट मीथेन की आंतरिक संरचना को बाधित करने के लिए पर्याप्त हैं। यह मीथेन को अपने क्षेत्र के पानी और वायुमंडल में छोड़ता है, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव के कारण क्षेत्र में जलवायु गर्म होती है। अलेउतियन द्वीप में आने वाले भयंकर भूकंप और जलवायु के गर्म होने के चरणों के बीच एक स्पष्ट संबंध है। उपयुक्त गति से लिथोस्फियर में दबाव पड़ने पर यह इसे आगे बढ़ाता है। यह अतिरिक्त दबाव मेटास्टेबल गैस हाइड्रेट्स और पर्माफ्रोस्ट को नष्ट कर सकते हैं, जिससे मीथेन निकलती हैं। इस योजना में तीन में से प्रत्येक घटक तार्किक है और गणितीय और भौतिक रूप से स्पष्टीकरण देता है। महत्वपूर्ण रूप से, यह एक जाने-पहचाने तथ्य के बारे में और अधिक जानकारी देता है।

लोबकोवस्की ने बताया कि आर्कटिक के तापमान में अचानक वृद्धि हमेशा से बेहिसाब बनी रही है। शोधकर्ता के अनुसार, उनके मॉडल पर चर्चा से लाभ होगा और इसमें और सुधार की संभावना है।

अम्फान से हुआ 1.70 लाख करोड़ का नुकसान

भारत में आई बाढ़ और चक्रवाती तूफान अम्फान को 2020 में आई दुनिया की 10 सबसे महंगी आपदाओं की लिस्ट में शामिल किया गया है। इन दोनों से करीब 1,69,208 करोड़ रुपए (2,300 करोड़ डॉलर) का नुकसान हुआ था। यह जानकारी क्रिश्चियन एड नामक संस्था द्वारा जारी रिपोर्ट 'काउंटिंग द कॉस्ट 2020' में सामने आई है। इस रिपोर्ट में दुनिया के 10 सबसे महंगी आपदाओं के बारे में बताया गया है जिनका सम्बन्ध जलवायु परिवर्तन से भी है।

'अम्फान' बंगाल की खाड़ी में आए सबसे शक्तिशाली तूफानों में से एक था। साथ ही यह 2020 का सबसे महंगा चक्रवाती तूफान भी है। इस तूफान में करीब 95,640 करोड़ रुपए (1,300 करोड़ डॉलर) का नुकसान हुआ था। बंगाल की खाड़ी में आए इस तूफान से भारत, श्रीलंका, भूटान और बांग्लादेश पर असर पड़ा था। इसमें करीब 128 लोगों की जान गई थी। इसके चलते 49 लाख लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा था। इसके साथ ही भारत में मानसून के दौरान आई बाढ़ और भूस्खलन से करीब 73,569 करोड़ रुपए (1,000 करोड़ डॉलर) का नुकसान हुआ था। वहीं इसके चलते 2,067 लोगों की मौत हुई थी। साथ ही इसके चलते करीब 40 लाख लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा था। केरल में आए भूस्खलन में 49 लोगों की मौत हो गई थी। जबकि असम में मई से अक्टूबर के बीच आई बाढ़ में करीब 60,000 लोग प्रभावित हुए थे, वहीं 149 लोगों की मौत हो गई थी।

कनाडा में कार्बन उत्सर्जन करने वालों का टूटेगा हौसला

ट्रूडो ने लिया कार्बन टैक्स चार गुना करने का फ़ैसला

ख़ासे इंतजार के बाद आखिर कनाडा ने अपनी लंबे समय से प्रतीक्षित जलवायु योजना का खुलासा कर ही किया है। इस प्लान की सबसे ख़ास बात है प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो का कार्बन एमिशन पर टैक्स बढ़ाने का फ़ैसला। उनका मानना है कि टैक्स बढ़ाने से उत्सर्जन पर लगाम लगायी जा सकती है। इसके साथ ही, सरकार ने इस दिशा में $15 बिलियन के नए निवेश का भी फ़ैसला लिया है।

फ़िलहाल कनाडा में $24 प्रति टन कार्बन उत्सर्जन का फेडरेल टैक्स लगता है, जिसे अब सरकार ने धीरे-धीरे बढ़ाते हुए साल 2030 तक $133 तक करने का फ़ैसला किया है। कनाडा सरकार की मानें तो यह फ़ैसले कनाडा के लिए न सिर्फ़ एक स्वस्थ पर्यावरण और एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हासिल कराएँगे बल्कि 2030 तक उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य को पार करने में भी मदद करेंगे।

हालांकि कनाडा के जलवायु विशेषज्ञों ने कार्बन की बढ़ती कीमत और जलवायु कार्रवाई में $15 बिलियन के नए निवेश का स्वागत किया है, वे कहते हैं कि कनाडा को वास्तव में एक वैश्विक स्वच्छ अर्थव्यवस्था में शामिल होने और अपने उत्सर्जन को कम करने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता है।

पेरिस में, COP21 में, कनाडा 2030 तक उत्सर्जन में 2005 के स्तर से 30 प्रतिशत की कटौती करने के सुपुर्द रहा। यह पूर्व कंजर्वेटिव सरकार द्वारा उसी वर्ष पहले निर्धारित किया गया लक्ष्य है। यह नई योजना 2030 तक 2005 के स्तर से 32-40 प्रतिशत उत्सर्जन में कमी के बीच एक लक्ष्य निर्धारित करती है। संघीय सरकार के अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि अगर योजना के सभी उपायों को लागू किया जाता है, तो वे वर्तमान लक्ष्य से 40 प्रतिशत तक बढ़ा हुआ नतीजा पाएंगे। नई जलवायु योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कार्बन की बढ़ती कीमत है। वर्तमान में, कार्बन की कीमत 30 डॉलर प्रति टन है और 2022 तक प्रति वर्ष 10 डॉलर बढ़कर 50 डॉलर प्रति टन होने वाली है। इस नई योजना के साथ, 2022 के बाद यह 15 डॉलर प्रति वर्ष के उच्च मूल्य पर बढ़ेगा और यह 2030 तक 170 डॉलर प्रति टन तक पहुंच जायेगा।

जलवायु कार्रवाई के लिए नए खर्च में $15 बिलियन की मुख्य विशेषताओं में शामिल हैं

- *प्रमुख परियोजनाओं में उत्सर्जन में कटौती के लिए भारी उद्योग को $3 बिलियन (स्टील और तेल)*
- *अरीना रंगभूमि) (और हॉल जैसी इमारतों की ऊर्जा दक्षता में सुधार के लिए समुदायों के लिए $1.5 बिलियन*
- *स्वच्छ ऊर्जा बिजली ग्रिड और बिजली भंडारण का विस्तार करने के लिए लगभग $1 बिलियन*
- *स्वदेशी समुदायों सहित दूरदराज के क्षेत्रों में डीजल ईंधन से दूर संक्रमण के लिए मदद करने के लिए $300 मिलियन*
- *शून्य-उत्सर्जन वाहनों के लिए छूट (रिबेट) के लिए $287 मिलियन*
- *कम कार्बन ईंधन के उत्पादन और उपयोग में वृद्धि के लिए $1.5 बिलियन*

हालांकि, कार्बन मूल्य निर्धारण के आसपास एक शेष बाधा यह है कि ओंटारियो, अल्बर्टा और सस्कैचेवन के प्रांत संघीय कार्बन मूल्य के लिए अदालत कीमें चुनौतियों का अनुसरण कर रहें हैं। सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई सितंबर में हुई और यह पता नहीं किप्रांतों के दावे पर कि संघीय सरकार ने अपने अधिकार क्षेत्र के दायरे के बहार कदम उठाएं हैं पर फैसला कब आएगा। जलवायु योजना के अन्य उल्लेखनीय तत्वों में बॉर्डर कार्बन समायोजन की छान-बीन के प्रस्ताव शामिल हैं, जो अपने कार्बन मूल्य के बिना क्षेत्राधिकारों से आयात पर एक मूल्य डालते हैं, और मीथेन नियमों को मजबूत करते हैं। योजना की कमियों में आने वाले स्वच्छ ईंधन मानक को सीमित करना शामिल है, जो कनाडा में सभी गैसीय जीवाश्म ईंधन पर लागू होता था लेकिन जिसमें अब गैस या ठोस ईंधन शामिल नहीं हैं। इस योजना से शून्य उत्सर्जन वाहनों के लिए जनादेश के लक्ष्य भी शामिल नहीं हैं।हालाँकि कनाडा इस नई योजना के साथ संजीदा दिखा रहा है, लेकिन लक्ष्यों को बना कर उन्हें पूरा न करने और साथ ही नीतियों को उद्योग द्वारा कमज़ोर करने का इतिहास रहा है इस देश का। 1990 के दशक की शुरुआत से, कनाडा ने अभी तक एक एकल उत्सर्जन कटौती लक्ष्य को पूरा नहीं किया है। कनाडा 2030 के लक्ष्य को 77 मिलियन टन से चूकने वाला है, जो कि एक वर्ष में 16 मिलियन यात्री कारों से उत्सर्जन के बराबर होगा।

हालाँकि प्रधान मंत्री ट्रूडो ने जलवायु कार्रवाई के महत्व के बारे में बार-बार बात की है, लेकिन उन्होंने अल्बर्टा तेल रेत को भी सहयोग दिया है। (कनाडा में, 1990 और 2018 के बीच, तेल और गैस क्षेत्र कार्बन प्रदूषण का सबसे तेजी से बढ़ने वाला स्रोत था, जिसका मुख्य कारण कार्बन-सघन तेल रेत उत्पादन में वृद्धि है। 2017 में, देश के 27 प्रतिशत ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लिए तेल और गैस जिम्मेदार थे।

निशांत सक्सेना

मास्क से 120 दिनों में टाली जा सकती हैं 400,000 मौतें

एजेंसियां :मास्क कितना महत्वपूर्ण है इसे इस बात से समझ सकते हैं इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मैट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन (आईएचएमइ) के अनुसार यदि अमेरिका में हर कोई मास्क पहन ले तो चार महीनों में इस महामारी से 55,000 लोगों की जान बचाई जा सकती है। यदि इसे वैश्विक स्तर पर देखें तो मास्क पहनने से इन चार महीनों में 400,000 मौतों को रोका जा सकता है गौरतलब है कि यह वायरस अब तक 17 लाख से ज्यादा लोगों की जान ले चुका है वहीं अनुमान है कि आने वाले चार महीनों में मरने वालों का आंकड़ा बढ़कर 25 से 29 लाख के बीच हो सकता है

इस महीने की शुरुवात में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने अपनी कोविड-19 के लिए जारी गाइडलाइन्स में मास्क पहनने की सिफारिश की थी यदि वेंटिलेशन की कमी और लोग ज्यादा हो तो डब्ल्यूएचओ ने इसे घर में भी पहनने की सलाह दी है यह गाइडलाइन्स विशेष रूप से संक्रमण के सामुदायिक प्रसार वाले क्षेत्रों के लिए जारी की गई थी मास्क वायरस को फैलने से रोकने के साथ-साथ पहनने वाले को भी बचाते हैं

सीडीसी के अनुसार कपड़े के बने मास्क भी संक्रमण को रोकने में प्रभावी होते हैं यह ने केवल 20 से 30 माइक्रोन या उससे बड़ी बूंदों को रोक सकते हैं बल्कि साथ ही उससे छोटी बूंदें जिन्हें अक्सर एयरोसोल कहते हैं उन्हें भी रोक सकते हैं।

कोरोना के कारण ग्रामीणों के खान पान में आया बदलाव

कोरोना वायरस संक्रमण की वजह से ग्रामीणों के खानपान की आदतों मे बदलाव आया है। एक सर्वे में लगभग 70 फीसदी ग्रामीण परिवारों ने कहा कि उन्होंने अब बाहर का खाना बंद कर दिया है। जबकि 33 फीसदी ग्रामीणों ने माना कि उन्होंने अब सब्जियां अधिक खाना शुरू कर दिया है, जबकि 30 फीसदी ने कहा कि वे अब फल खाना पसंद करते हैं। वहीं लगभग 40 फीसदी ग्रामीणों ने कहा कि कुछ समय पहले तक उन्होंने मीट, मछली, अंडा खाना बंद कर दिया था, जबकि नौ फीसदी ने कहा कि उन्होंने मांसाहार खाना पूरी तरह बंद कर दिया है।

किसानों को उनके उत्पादों का बेहतर मार्केटिंग और पूरा मूल्य दिलाएगी सरकार:मुख्यमंत्री

- **मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन नाबार्ड के स्टेट क्रेडिट सेमिनार में शामिल हुए, कहा- किसानों को उनके उत्पादों को बेहतर मार्केटिंग और पूरा मूल्य दिलाएगी सरकार**
- **ग्रामीण कारीगरों और महिला समूहों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विपणन को लेकर सरकार उठा रही कदम**
- **मुख्यमंत्री ने नाबार्ड को सहकारिता और कृषि क्षेत्र को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में सक्रिय भागीदारी निभाने को कहा**
- **राज्य के हर क्षेत्र में व्यापक संभावनाएं हैं । यहां के जिले की अपनी-अपनी खासियतें हैं ।**
- **खनिज के अलावा कृषि, पशुपालन ,मछली पालन, पर्यटन, खेल ,कला संस्कृति आदि क्षेत्रों मैं झारखंड में असीम संभावनाएं । इस क्षेत्र को विकसित कर अपने राज्य को काफी आगे ले जा सकते हैं ।**

संवाददाता

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने नाबार्ड के द्वारा आयोजित स्टेट क्रेडिट सेमिनार में कई बातें कहीं । उन्होंने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देकर राज्य के विकास के मार्ग को बेहतर तरीके से प्रशस्त किया जा सकता है । इस मौके पर उन्होंने नाबार्ड द्वारा झारखंड राज्य लिए फोकस पेपर जारी किया । उन्होंने कहा कि इस फोकस पेपर में जिन चीजों का जिक्र किया गया है, उससे राज्य के

उउत्पादों को बढ़ावा देगी सरकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के किसानों और महिला समूह द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बाजार उपलब्ध कराया जाएगा । उन्होंने कहा कि इस बाबत झारक्राफ्ट की ओर से पलाश ब्रांड के जरिए इन उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है । उन्होंने कहा कि महिला समूह द्वारा उत्पादित वस्तुओं को मॉल और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में बेचने के लिए भी सरकार कदम उठाएगी । उन्होंने कहा कि फूड प्रोसेसिंग को भी राज्य में बढ़ावा दिया जाएगा ।

कई योजनाएं शुरू की गई ,कई शुरू करने की योजना

मुख्यमंत्री ने कहा कि लॉक डाउन के सरकार ने कई योजना चलाई ,इसका फायदा लोगों को मिल रहा है ।वही अब कई नई योजनाओं को शुरू करने की तैयारी हो चुकी है ।इन योजनाओं की कार्य योजना बना ली गई है ।इससे राज्य को विकास के क्षेत्र में आगे ले जाने कि हमारी कोशिश कामयाब होगी ।उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण से निपटने की दिशा में उठाए गए कदमों से हमारे द्वारा शुरू की गई योजनाएं आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करेगा । कोरोना काल में जिन्होंने बेहतर कार्य किया है उसका आकलन होगा । ऐसे में अपने लक्ष्य को पाने के लिए हमने जो कार्य योजना बनाई है, उसमें किसानों मजदूरों और गरीबों के कल्याण का विशेष ध्यान रखा गया है ।

बैंक अपनी आमदनी का हिस्सा राज्य में खर्च करें

मुख्यमंत्री ने बैंकों को सुझाव दिया कि के यहां से जो आमदनी करते हैं उसका ज्यादातर हिस्सा इस राज्य के विकास में खर्च करें । उन्होंने कहा कि राज्य के विकास में बैंकों का हम योगदान हैं । ऐसे में बैंकों को चाहिए कि सरकार के साथ हर कदम पर सहयोग करें ताकि जरूरतमंदों को इसका लाभ मिल सके ।

नाबार्ड के कार्यों की सराहना की

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में नाबार्ड के द्वारा विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है । इन गतिविधियों के माध्यम से किसानों ,श्रमिकों सहकारी संस्थाओं पशु पालकों आदि को ऋण और अनुदान देकर स्वावलंबी बनाया जा रहा है । ग्रास रूट पर जरूरतमंदों को आगे बढ़ाने में मदद कर रही है ।इसके अलावा सरकार को सलाह देने में भी अहम भूमिका रही है ।उन्होंने कहा कि नाबार्ड ने विकास कार्यों के अधिकतर हिस्से को छुआ है । ऐसे में इसका योगदान काफी सराहनीय है । इस मौके पर नाबार्ड ने राज्य में चलाई जा रही गतिविधियों की जानकारी से मुख्यमंत्री को अवगत कराया

सेमिनार में वित्त विभाग के प्रधान सचिव श्रीमती हिमानी पांडेय, जल संसाधन विभाग के प्रधान सचिव प्रशांत कुमार, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ ओ एन सिंह,, नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री आशीष कुमार पाढी और भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक समेत कई अधिकारी मौजूद थे ।

खेत को नुकसान पहुंचाने वाले जानवरों को बचाने वाले अब किसानों का समर्थन कर रहे हैं: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री द्वारा जंगली जानवरों को मारने का मुद्दा किसान आंदोलन से जोड़ने के बाद यह सवाल उठ रहा है कि आखिर इन जानवरों से फसलों का कितना नुकसान होता है?

एजेंसियां :25 दिसंबर को किसानों के साथ अपनी बातचीत और संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि खेतों को नुकसान पहुंचाने वाले जानवर हमारे लिए एक बड़ी चिंता है। लेकिन, पर्यावरणविद या पर्यावरण की वकालत करने वाले लोग ऐसे जानवरों की हत्या का विरोध करते हैं। इस बातचीत के दौरान मध्य प्रदेश के एक किसान ने प्रधानमंत्री के समक्ष यह चिंता जताई कि ये जानवर फसलों को भारी मात्रा में नुकसान पहुंचा रहे हैं। वह चाहते थे कि मोदी इस समस्या का समाधान निकालें। अपने जवाब में,प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वह इस समस्या से तब से अवगत है, जब वह गुजरात के मुख्यमंत्री थे।

प्रधानमंत्री ने कहा,''लेकिन जो लोग आज किसानों के विरोध-प्रदर्शन का समर्थन कर रहे हैं, उन्होंने खेत को नुकसान पहुंचाने वाले जानवरों को मारने वाले किसानों का विरोध किया और उन किसानों को जेल भिजवाया। जंगली जानवरों से होने वाली फसल क्षति का आकलन राज्य स्तरों पर किया जाता है। कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग इस नुकसान का आकलन नहीं करता है। इस वजह से फसल नुकसान का सटीक आकलन मुश्किल है और इसे ले कर आने वाले आंकड़े संदिग्ध हैं। हालांकि, 15 सितंबर, 2020 को लोकसभा में एक सवाल का जवाब देते हुए, केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 10 राज्यों में इस कारण से हुई फसल हानि के मामलों और नुकसान के आंकड़े साझा किए थे।

आंध्र प्रदेश ने सबसे अधिक ऐसे मामलों की संख्या और फसल नुकसान दर्ज किया था। यहां 2017-18 में ऐसे मामलों की संख्या 1,051 थी, जो 2019-20 में बढ़कर 3,744 हो गए। इसी अवधि में फसल का नुकसान 582 एकड़ से बढ़कर 3,106 एकड़ हो गया। 2017-18 में मुआवजा 34,96,000 रुपये से बढ़ कर 2019-20 में 1,17,20,000 हो गया। साल 2020 में 6 मार्च को राज्यसभा में उठाए गए एक अन्य सवाल के जवाब में, तोमर ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के तहत, जंगली जानवरों द्वारा किसानों को फसल नुकसान के लिए राज्यों द्वारा दिए गए मुआवजे के आंकड़ों को सामने रखा था। 2018-19 में, यह मुआवजा 3490 लाख रुपये था। महाराष्ट्र और कर्नाटक ने सबसे अधिक राशि, क्रमश: 1410 लाख और 1028 लाख रुपये जारी किए थे।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के अलावा, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भी देश में वन्यजीवों और उनके निवास स्थल के प्रबन्धन के लिए केंद्र प्रायोजित योजनाओं, जैसे "इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ वाइल्ड लाइफ हैबिटाट, ''प्रोजेक्ट टाइगर'' और ''प्रोजेक्ट एलीफेंट'' के तहत राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

राज्य सरकारें समय-समय पर केंद्र से वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कुछ जंगली प्रजाति को ''वर्मिन'' (पौधों को नुकसान पहुंचाने वाले छोटे जंगली जीव) घोषित करने का भी अनुरोध करते हैं। अधिनियम की धारा 62 केंद्र सरकार को अधिनियम की अनुसूची I और II में उल्लिखित प्रजातियों के अलावा भी अन्य किसी प्रजाति को जंगली जानवर घोषित करने की शक्ति प्रदान करता है। जिस प्रजाति को ''वर्मिन'' घोषित कर दिया जाता है, उन्हें वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची V में डाल दिया जाता है। किसी प्रजाति को वर्मिन घोषित करने का मतलब है कि इन्हें सामूहिक रूप से मारा जा सकता है और इसके लिए कानून के दंडात्मक प्रावधान भी लागू नहीं होंगे। अनुसूची V में स्थायी रूप से कुछ प्रजातियां शामिल हैं। ये प्रजातियां हैं, कौवा, फ्रूट बैट (चमगादड़) और चूहे। इन प्रजातियों के अलावा, राज्यों ने केंद्र से कहा है कि जंगली सूअरों, नीलगाय और बंदरों को भी वर्मिन घोषित किया जाए। 4 फरवरी, 2019 को राज्यसभा में दिए जवाब में, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के राज्य मंत्री, महेश शर्मा ने संसद को बताया कि बिहार में नीलगाय और जंगली सुअर को 2015 में एक वर्ष की अवधि के लिए, राज्य के दस जिलों में वर्मिन घोषित किया गया था। जंगली सुअर को पूरे उत्तराखंड में 2016 में पहली बार एक वर्ष के लिए और फिर 2018 में एक और वर्ष के लिए ''वर्मिन'' घोषित किया गया था। 2016 में हिमाचल के एक जिले में छह महीने के लिए बंदरों को वर्मिन घोषित किया गया था। इस घोषणा के बाद, राज्य के 12 जिलों में से 10 में एक साल के लिए बंदरों को ''वर्मिन'' घोषित किया गया था।

रॉंची मंडल में फिट इंडिया साइक्लोथॉन के अंतर्गत साइकलिंग का आयोजन

रांची संवाददाता :23दिसंबर 2020 को रांची रेल मंडल में फिट इंडिया कैम्पेन के अंतर्गत साइक्लोथॉन का आयोजन किया गया। मंडल रेल प्रबन्धक नीरज अंबष्ठ के नेतृत्व मे साइक्लोथॉन रांची रेल मण्डल के हटिया स्थित सेरसा हॉकी स्टेडियम से प्रारम्भ हो कर हटिया स्टेशन रोड मार्ग से बिरसा चौक होते हुये वापस सेरसा हॉकि स्टेडियम पर इसका समापन हुआ । साइक्लोथॉन के अवसर पर मंडल रेल प्रबन्धक नीरज अंबष्ठ ने सभी रेल अधिकारी एवं कर्मचारियों से अपील की, कि हर रोज़ कम से कम आधा घंटा अपने फ़िटनेस के लिए जरूर दें साथ ही कहा साइकलिंग करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है तथा हमें अपने शरीर को फिट रखने में मदद करता है। भारतीय महिला हॉकी टीम की सदस्या, ओलिंपियन सुश्री निक्की प्रधान ने लोगों से अनुरोध किया की जॉगिंग, वॉकिंग या साइकलिंग के द्वारा अपने शरीर को फिट रख सकतें है। साइक्लोथॉन में एशियाई खेल रजत पदक विजेता तीरंदाज़ सुश्री मधुमिता एवं राष्ट्रीय फूटबाल रेफ्री ओम प्रकाश ठाकुर ने भी भाग लिया ।

साइक्लोथॉन में अपर मंडल रेल प्रबन्धक (परिचालन)एम एम पंडित, अपर मंडल रेल प्रबन्धक (इन्फ्रा)सतीश कुमार, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक सह मुख्य जनसंपर्क अधिकारी नीरज कुमार, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सह मंडल क्रीड़ा अधिकारी अवनीश, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी माणिक शंकर, वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (ट्रेक्शन)ए आर दास, मंडल सुरक्षा आयुक्त प्रशांत यादव तथा अन्य अधिकारी, कर्मचारी एवं खिलाड़ियों ने बड़े ही उत्साह के साथ साइकलिंग की।

कोरोना फैलाने वाली बड़ी बूंदों को रोक सकते हैं मास्क: शोध

वैज्ञानिकों के अनुसार यदि मास्क पहना है तो 2 मीटर की दूरी पर खांसने और छींकने से निकली बड़ी बूंदों के संपर्क में आने का खतरा 10,000 गुना तक कम हो जात

कोरोना फैलाने वाली 99.9 फीसदी बड़ी बूंदों को मास्क रोक सकते हैं यह जानकारी हाल ही में रॉयल सोसाइटी ओपन साइंस जर्नल में छपे एक शोध में सामने आई है शोधकर्ताओं के अनुसार मास्क बोलने, खांसने और छींकने से निकलने वाली 99.9 फीसदी बड़ी बूंदों को रोक सकते हैं जिससे कोविड-19 के फैलने का खतरा घट जाता है वैज्ञानिकों के अनुसार यदि मास्क पहना है तो 2 मीटर की दूरी पर खांसने और छींकने से निकली बड़ी बूंदों के संपर्क में आने का खतरा 10,000 गुना तक कम हो जाता है यदि दो लोगों के बीच की दूरी 50 सेंटीमीटर भी हो तो भी मास्क उसी तरह काम करता है ।इस शोध की प्रमुख शोधकर्ता और यूनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग में विशेषज्ञ इग्नाजियो मारिया वियोला के अनुसार ''इसमें कोई संदेह नहीं कि मास्क नाटकीय रूप से वायरस युक्त बूंदों को फैलने से रोक सकते हैं''

जमीन पर गिरने से पहले यह बड़ी बूंदें वायरस फैलाने में मुख्य भूमिका निभाती हैं इसके विपरीत छोटी बूंदें लम्बे समय तक हवा में रह सकती हैं हम छोटी से बड़ी हर तरह की बूंद को छोड़ते हैं इनमें से कौन से बूंद कब जमीन पर गिरेगी यह तापमान, आद्रता और हवा की गति पर निर्भर करता है।

धूर्वा डैम को प्लास्टिक मुक्त करने के लिए प्रत्यंचा का अभियान

लगातार दूसरे वर्ष राँची स्थित ''प्रत्यंचा'' राँची को स्वच्छता अभियान की अंक तालिका में ऊपर लाने के उद्देश्य से , पर्यटकों में प्रसिद्ध धूर्वा डैम को प्लास्टिक मुक्त करने के लिए अभियान छेड़ेगी ।प्रत्यंचा की टीम छोटी कोशिशों को बार बार तब तक करते रहने में विश्वास रखती है जब तक की लक्ष्य प्राप्त न हो। इस मुहिम में संस्था के साथ क्रर राँची के 8 छात्र भी जुड़े हगे हैं जो प्रत्यंचा में एक महीने की इंटर्न्शिप कर रहे हैं ।Volunteers का उत्साहवर्धन करने के लिए तथा स्वच्छ भारत में युवाओं के महत्व को बताने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर पंकज सोनी (अध्यक्ष, मिशन ब्लू फ़ाउंडेशन) एवं शशांक राज (सेनट सदस्य राँची यूनिवर्सिटी) को आमंत्रित किया गया है। इस सफ़ाई अभियान के माध्यम से संस्था यह संदेश देना चाहती है की पर्यटन स्थल हमारी धरोहर हैं और उनकी देख-रेख हमारी ज़िम्मेदारी है। जब भी कभी पर्यटन के लिए जाए तो अपना कचरा स्थल पर ना छोड़ें बल्कि वापस घर आकार या म्यूनिसिपैलिटी के किसी कचरे के डब्बे में हाई डालें।

संस्था की तरफ़ से अभियान का नेतृत्व अध्यक्ष अक्षय पल्लव और सचिव प्रणव प्रभात ने किया।

संयुक्त राष्ट्र कॉन्फ्रेंस के लिए 140 देशों के युवाओं ने बनाई साहसिक जलवायु संधि

एजेंसियां

लगभग डेढ़ सौ देशों के सवा तीन सौ से ज़्यादा युवाओं ने आज दुनिया भर के तमाम नेताओं और सरकारों से, एक खुले पत्र के माध्यम से, व्यावहारिक, प्रगतिशील और युवा केंद्रित जलवायु नीतियों को लागू करने का आग्रह किया। इस क्रम में COP26 की तर्ज़ पर, मॉक COP26 जो कि एक अंतरराष्ट्रीय युवा-नेतृत्व वाला जलवायु सम्मेलन है, के दौरान 140 देशों के प्रतिभागियों ने COP26 के लिए उच्च स्तरीय जलवायु कार्रवाई चैंपियन निजेल टॉपिंग को अपनी बनाई संधि के दस्तावेज़ इस उद्देश्य से दिए कि वो उनकी बात दुनिया भर की सरकारों तक पहुंचाएंगे और आग्रह करेंगे कि तमाम देश अपनी जलवायु महत्वाकांक्षा और कार्रवाई को बढ़ाएं।

युवाओं की यह मॉक COP26 संधि दरअसल उन 18 नीतियों को रेखांकित करती है जिन्हें ये युवा चाहते हैं कि नीति निर्माता ग्लासगो में होने वाली वास्तविक COP26 में प्राथमिकता दें। इस संधि की नीतिगत सिफारिशें, जो कि पिछले दो सप्ताह में भाषणों और वार्ताओं के माध्यम से विकसित हुई हैं, मूल्यतः छह विषयों को कवर करती हैं। यह विषय हैं जलवायु शिक्षा, जलवायु न्याय, स्वास्थ्य और भलाई, जलवायु लचीला समुदाय, राष्ट्रीय कार्बन कटौती लक्ष्य और जैव विविधता की रक्षा।

मॉक COP26 में दक्षिण अमेरिका के गुयाना के प्रतिनिधि सुपन दाश-अललेने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहते हैं, "यह साल बेहद महत्वपूर्ण फ़ैसलों के लिए रहा और ख़ास तौर से जलवायु प्रैवार्त्न के ख़िलाफ़ मज़बूत फैसलों वाला रहा 2020। ऐसा साल जब विश्व नेताओं ने अपने शब्दों को कार्यों में बदल दिया। लेकिन फ़िलहाल जलवायु प्रलय का खतरा दूर नहीं हुआ है।

आगे, मॉक COP26 की प्रासंगिकता बताते हुए वो कहते हैं, ''मॉक COP26 दुनिया के नेताओं को एक मजबूत संदेश भेजता है कि युवा भी वैश्विक वार्ताओं का समन्वय कर सकते हैं और हमारे पास भी समाधान हैं। अब वक़्त हमारा है हमारे भविष्य के लिए फैसले लेने का और हमारी भी भागीदारी होनी चाहिए। इन युवाओं को क़ानूनी सलाह और तमाम निष्कर्षों को संधि की शक्ल देने में इनकी मदद की क्लाइंटएर्थ और COP26andbeyond के वकीलों की एक टीम ने। क्लाइंटएर्थ के सीईओ और संस्थापक जेम्स थॉर्नटन ने इस विषय पर टिप्पणी करते हुए कहा, ''इन युवाओं ने दुनिया के नेताओं को एक बेहद ठोस सन्देश दिया है। अब सरकारों को सोच समझ कर फैसले लेने चाहिए क्योंकि उनके द्वारा लिए गए निर्णय आने वाले कई वर्षों के लिए नयी पीढ़ी को प्रभावित करेंगे। यदि मॉक COP26 संधि को अपनाया जाता है, तो स-रकार IPCC की सिफारिश के अनुरूप ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध होगी, और उत्सर्जन के प्रतिबंध पर प्रतिबंध लगा देगी। सरकारें वायु गुणवत्ता पर मजबूत विनियमन के लिए भी प्रतिबद्ध होंगी, जिससे प्रदूषणकारी उद्योगों को सुरक्षित और सांस की हवा की गारंटी देने के लिए उनके उत्सर्जन में काफी कमी आएगी।

संधि में, मॉक COP26 प्रतिनिधियों ने सरकारों से किसानों को ऐसी प्रथाओं से दूर करने के लिए नीतिगत उपायों को शामिल करने का आह्वान किया है जो मिट्टी, पानी, ईंधन की कटाई, और जैव विविधता के लिए हानिकारक हैं। प्रतिनिधि भी मानव गतिविधि द्वारा पर्यावरण के बड़े पैमाने पर विनाश और क्षति का अपराधीकरण करने के लिए ईकोसाइड पर एक दूरगामी कानून का आह्वान कर रहे हैं। दो सप्ताह के इस सम्मेलन में जलवायु संकट से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले देशों की आवाज़ों को प्राथमिकता दी गई है। ग्लोबल साउथ के लोगों ने 72% प्रतिनिधि बनाए और इन देशों का समर्थन सुनिश्चित करने के लिए संधि जारी है। प्रतिभागियों की औसत आयु 22 वर्ष की थी और 63% महिला या गैर-बाइनरी थीं।

अगले 12 महीनों में, मॉक COP26 प्रतिनिधि और स्वयंसेवक अपने चुने हुए राजनीतिक प्रतिनिधियों के साथ जुड़ेंगे, ताकि वे नीतिगत मांगों को लागू करने का आग्रह कर सकें। युवा जलवायु कार्यकर्ताओं का लक्ष्य अगले वर्ष नई और प्रगतिशील घरेलू जलवायु नीतियों के कार्यान्वयन से है, जो COP26 तक की महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं।

फोटो न्यूज

लोहरदगा 27 नं. पुल झारखंड का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज

आकाश साहू

लोहरदगा. जिले के कुडू प्रखंड के सलग – बड़की चापी स्थित रेलवे को 27 नं पुल लोगो को खूब आकर्षित कर रहा है । इस पुल का निर्माण लोहरदगा रेल लाईन को टोरी- चंदवा रेल लाईन से जोड़ने के लिए किया गया, लेकिन यह पुल अपने ऊंचाई और यहां से दिखने वाले मनमोहक खुबसुरती के कारण प्रसिद्ध हो रहा है। जंगल के बीचो- बीच इस पुल का निर्माण और ट्रेन से गुजरने वक्त इससे दिखने वाला मनोरम दृश्य सबों को अभिभूत कर देता है। पुल के नीचे बहने वाली नदी और वन इसके मुख्य आकर्षण हैं। इस पुल ने अपने निर्माण के साथ ही झारखंड का सबसे ऊंचा रेल ब्रीज होने का तमगा प्राप्त कर लिया। यह पिछले 3-4 वर्षों में लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते रहा है। यहां पर बहुत से लोग अपने परिवार के साथ घूमने नजर आते हैं। विदेशो से भी यहां की खूबसूरती देखने लोग आ चुके हैं। सैर सपाटे के शौकीन युवाओं की यह पहली पसंद है। झारखंड सरकार को इस क्षेत्र कि विकास के लिए थोड़ा और अधिक प्रयास करना चाहिए जिस से इस क्षेत्र के साथ साथ झारखंड के सबसे ऊंचे रेलवे ब्रिज और इससे दिखने वाले मनोहारी दृश्य की चर्चा देश के साथ विदेशो में भी हो। 27 नं पुल अपने खूबसूरत वादियों को सजाये इस नए साल में आप सैलानियो का इंतज़ार कर रहा है, तो कब जा रहे हैं इसे देखने?

5.6 करोड़ हेक्टेयर खाली पड़ी कृषि भूमि पर लगाए जा सकते हैं सोलर प्लांट

दुनिया भर में 8.3 करोड़ हेक्टेयर से ज्यादा कृषि भूमि खाली पड़ी है इस जमीन के करीब 68 फीसदी हिस्से पर सोलर प्लांट लगाए जा सकते हैं

दुनिया की बेकार पड़ी 5.6 करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि पर सोलर प्लांट लगाए जा सकते हैं। यह जानकारी जर्नल रिन्यूएबल एनर्जी में प्रकाशित एक शोध में सामने आई है। पता चला है कि दुनिया भर में 8 करोड़ हेक्टेयर से ज्यादा कृषि भूमि खाली पड़ी है, जिस पर खेती नहीं की जा रही। इस जमीन के करीब 68 फीसदी हिस्से पर सोलर प्लांट लगाए जा सकते हैं, जबकि बाकी 2.4 करोड़ हेक्टेयर (32 फीसदी) बायोएनर्जी के लिए उपयुक्त है।

यह शोध 1992 से 2015 के आंकड़ों पर आधारित है। इस 8.3 करोड़ हेक्टेयर जमीन में से 30 फीसदी एशिया में, 28 फीसदी अमेरिका में, 22 फीसदी अफ्रीका में, 20 फीसदी यूरोप में और 5 फीसदी ओशिनिया में स्थित है। सही भूमि उपयोग से हर वर्ष किया जा सकता है 214 एक्साजूल्स ऊर्जा का उत्पादन

यदि इस जमीन का सही उपयोग किया जाए तो इससे कुल मिलकर हर वर्ष करीब 214 एक्साजूल्स ऊर्जा का उत्पादन किया जा सकता है। इसमें से 179 एक्साजूल्स सौर ऊर्जा के जरिए और बाकी 35 एक्साजूल्स बायोएनर्जी से प्राप्त की जा सकती है।

गौरतलब है कि इसी को ध्यान में रखकर भारत में भी जुलाई 2019 में प्रधानमंत्री कुसुम योजना शुरू की गई थी। इस योजना के तहत किसान अपनी खाली पड़ी जमीन पर सोलर प्लांट लगाकर ऊर्जा का उत्पादन कर सकते हैं। इस ऊर्जा की मदद से वो अपनी जमीन में सौर ऊर्जा उपकरण और पंप लगाकर अपने खेतों की सिंचाई कर सकते हैं। साथ ही अगर किसी किसान के पास बंजर भूमि है तो वह उसका इस्तेमाल सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए कर सकता है। वो इस बिजली को ग्रिड को दे सकता है, इससे उसे बंजर जमीन से भी आमदनी होने लगेगी।

इसकी मदद से 2050 तक उतनी ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है जो विश्व में रिन्यूएबल एनर्जी की 33 से 50 फीसदी मांग को पूरा कर सकती है। यह जलवायु परिवर्तन को रोकने में भी मददगार हो सकता है। हमारे पास भूमि सीमित है, जिसपर पहले ही खाद्य उत्पादन और जंगल एवं जैविविधता को बचाए रखने का दबाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में इस जमीन का ऊर्जा उत्पादन के लिए उपयोग संघर्ष का कारण बन सकता है। यही वजह है कि खाली पड़ी कृषि भूमि पर रिन्यूएबल एनर्जी का उत्पादन, जलवायु के दृष्टिकोण से तो बेहतर है ही साथ ही इसकी मदद से सोलर और बायोएनर्जी के लिए जमीन को लेकर होने वाले संघर्षों को भी सीमित किया जा सकता है। भूमि के सही प्रबंधन से न केवल कृषि और जैवविविधता को मदद मिलेगी साथ ही इससे रिन्यूएबल एनर्जी के उत्पादन में भी वृद्धि होगी।

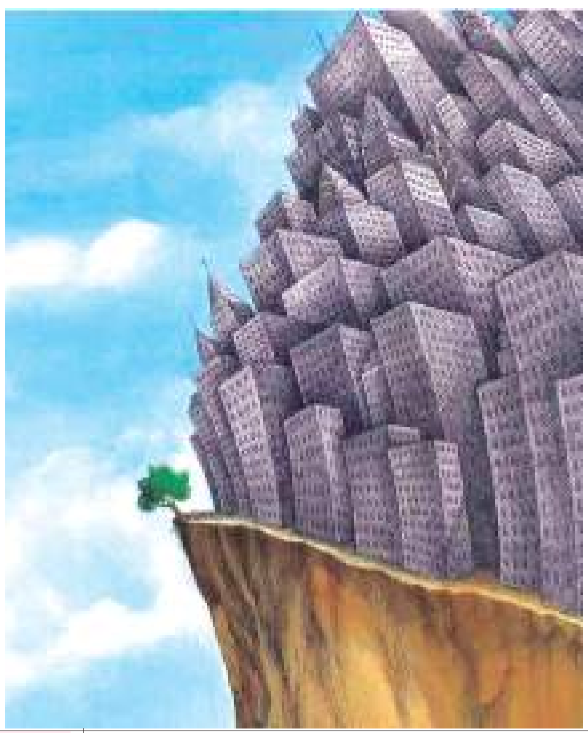

2854 किमी. तक बहीं प्लास्टिक बोतलें

एजेंसियां

गंगा में प्लास्टिक प्रदूषण का अनूठा तरीके से पता लगाया गया है, प्लास्टिक बोतलों में इलेक्ट्रॉनिक टैग लगाकर उन्हें गंगा में छोड़ा गया जो कि बंगाल की खाड़ी तक पहुंचा।

गंगा नदी में प्लास्टिक प्रदूषण कुछ ही महीनों में हजारों किलोमीटर की यात्रा तय कर सकता है, यह बात गंगा में छोड़े गए इलेक्ट्रॉनिक टैग वाले प्लास्टिक बोतल से पता चली है। शोधार्थियों ने यह निष्कर्ष जीपीएस और सेटलाइट टैग वाली प्लास्टिक बोतलों को गंगा और बंगाल की खाड़ी में छोड़ने के बाद पाया। इलेक्ट्रॉनिक टैग वाली बोतल ने अधिकतम दूरी 2854 किलोमीटर (1,786 मील) 94 दिनों में पूरी की।

एक्सटेर यूनिवर्सिटी और ज़ूओलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंदन (जेएसएल) के शोधार्थियों ने नेशनल जियोग्राफिक सोसाइटी सी टू सोर्स को साथ मिलकर यह अधयरन किया है। एक्सटेर यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर इकोलॉजी एंड कंजर्वेशन के डॉक्टर इमिली डुंकन ने बताया कि टैग वाली प्लास्टिक बोतल में हमारा संदेश था कि यह प्लास्टिक प्रदूषण कितनी दूर और कितनी तेजी से कहीं जा सकता है। यह दर्शाता है कि यह वास्तिवकता में वैश्विक मुद्दा है, सिर्फ एक प्लास्टिक पीस नदी या समुद्र में फेंका जाए तो वह दुनिया के किसी दूसरे कोने में जाकर मिलेगा।

सामान्य तौर पर गंगा में बोतल कई चरणों में मूव करती रही, प्राय: डाउनस्ट्रीम में कई जगह रास्तों में जाकर फंसी। समुद्र मे बोतल जबरदस्त दूरी नाप सकती हैं क्योंकि वहां कोस्टल करंट पहले होता है उसके बाद वह और चौड़े स्तर पर फैल जाता है। इस अध्ययन में 500 मिलीलीटर की 25 बोतलों को गंगा में फेंका गया था।

कंजर्वेशन टेक्नोलॉजी ऑर्गेनाइजेशन अर्रीबडा और जेएसएल ने कहा कि प्रत्येक प्लास्टिक की बोतल के अंदर का हार्डवेयर पूरी तरह से खुला स्रोत है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि शोधकर्ता दूसरे प्लास्टिक या पर्यावरणीय कचरे को ट्रैक करने के लिए हमारे द्वारा प्रस्तुत समाधान को दोहरा सकते हैं, संशोधित कर सकते हैं या इसे बढ़ा सकते हैं।

प्लास्टिक की बोतलों के अंदर एंबेडिंग इलेक्ट्रॉनिक्स ने भी सेलुलर और सैटेलाइट ट्रांसमीटर दोनों का उपयोग करने का एक अनूठा अवसर पेश किया है। इससे यह तय हुआ है कि हम शहरी वॉटरवेज के माध्यम से प्रत्येक बोतल की आवाजाही को ट्रैक कर सकते हैं।

बाढ़ से बचायेगी यह तकनीक

एजेंसियां

शोधकर्ताओं ने कहा कि मौसम विज्ञान और हाइड्रोलॉजी के सही तरीके से अवलोकन, तकनीक, माप और मॉडलिंग के आंकड़े साझा किए जाए, तो बाढ़ से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

दुनिया भर में बाढ़ से हर साल करोड़ों के जान-माल का नुकसान होता है, बाढ़ को पूरी तरह से रोका तो नहीं जा सकता, मगर इससे निपटने की तैयारी की जा सकती है, ताकि नुकसान से बचा जा सके। इसी को लेकर अब एक अंतरराष्ट्रीय शोध टीम ने बताया है कि दुनिया भर में जमीनी आधार पर पूर्वानुमान लगा कर बाढ़ जैसी आपदाओं से निपटने के लिए एक प्रणाली की जरूरत है।

शोधकर्ता प्रोफेसर हुआन वू ने कहा कि दुनिया भर में बाढ़ से निपटने के लिए स्थानीय हाइड्रो-माटेरोलॉजिकल समाधान (ग्लोकल-ग्लोबल टू लोकल-हाइड्रोमेटेरोलॉजिकल सॉल्यूशन) की बेहतर तैयारियों को और विभिन्न प्रकार की वर्षा से आने वाली बाढ़ के प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। बाढ़ हर साल बड़े पैमाने पर चीन, भारत और अमेरिका जैसे कई देशों में आती है। प्रोफेसर वू, सन यात-सेन विश्वविद्यालय के जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदा अध्ययन और वायुमंडलीय विज्ञान के प्रोफेसर हैं।

हाइड्रोमेटोरोलॉजी: मौसम विज्ञान और जल विज्ञान की एक शाखा है जिसमें भूमि की सतह और निचले वातावरण के बीच पानी और ऊर्जा के हस्तांतरण का अध्ययन किया जाता है। वू के अनुसार इस तरह के समाधान, शोधकर्ताओं द्वारा तैयार किए गए वैश्विक बाढ़ के लिए स्थानीय-हाइड्रोमाटेरोलॉजिकल समाधान (जीएचएस-एफ) हैं, ये प्रणाली वैज्ञानिक अनुसंधान और बाढ़ से निपटने के लिए आवश्यक है। एक जीएचएस-एफ व्यापक रूप से मौसम के पूर्वानुमानों को इस समझ के साथ जोड़ सकता है कि कैसे बारिश के बढ़ने से नदी के तटों में इसका पानी फैल सकता है और साथ ही लगातार बारिश और बाढ़ की सही जानकारी दी जा सकती है। वू ने बारिश और बाढ़ के बीच के जटिल संबंधों की ओर इशारा करते हुए यह तर्क दिया कि यदि मौसम विज्ञान और हाइड्रोलॉजिकल वर्ग ने इसका सही तरीके से अवलोकन, तकनीक, माप और मॉडलिंग के आंकड़े साझा किए, तो बाढ़ से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

शोधकर्ताओं ने विशेष रूप से मध्य-पूर्वी और दक्षिणी चीन में 2020 में 20 मई से 18 जुलाई तक बाढ़ की घटनाओं के बारे में पता लगाया। इन महीनों में, यांग्त्ज़ी नदी में बाढ़ आ गई थी इस इलाके में पिछले 60 वर्षों में औसत मात्रा की तुलना में 49 फीसदी अधिक बारिश हुई थी। इस अवधि की सात प्रमुख बारिश की घटनाओं ने 27 प्रांतों में लगभग 4 करोड़ लोगों को प्रभावित किया, 141 लोगों की मौत या लापता होने के बारे में पता चला। यह शोध एडवांसेज इन एटमोस्फियरिक साइंसेज नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। वू ने कहा बाढ़ की घटनाओं, विकास, सीमा में बदलाव और स्थानीय विस्तार के साथ वैश्विक या राष्ट्रीय पैमाने पर बाढ़ से अधिक खतरे वाले क्षेत्रों का पता लगाया जाना चाहिए। हमें चाहिए कि बाढ़ प्रबंधन और इससे निपटने के लिए राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां एक दूसरे के साथ तालमेल करें।

दुनिया को मिली पहली व्यावसायिक रूप से सफल मिनीग्रिड कंपनी

एजेंसियां

सामुदायिक स्तर की 100 मिनिग्रिड और 5,000 लघु व्यवसाय ग्राहकों को ऊर्जा उपलब्ध करने के साथ ही हस्क पावर सिस्टम बनी व्यावसायिक रूप से पहली सफल मिनीग्रिड कंपनी

भारत और अफ्रीका में रिन्यूएबल मिनीग्रिड्स का संचालन करने वाली अग्रणी ग्रामीण ऊर्जा कंपनी, हस्क पावर, ने घोषणा की है कि उसने अक्षय ऊर्जा उद्योग के क्षेत्र में दो अहम मील के पत्थर पार कर लिए हैं। और यह मील का पत्थर है 100 सामुदायिक मिनीग्रिड्स बनाना और 5,000 से अधिक सूक्ष्म-उद्यम (माइक्रो एंटरप्राइज़) ग्राहकों की ऊर्जा माँग पूरी करना।

कोरोनावायरस महामारी की वजह से होने वाली आर्थिक मंदी के बावजूद, हस्क पावर ने शून्य सेवा व्यवधान को प्राप्त करके और मौजूदा और नए ग्राहकों को आपातकालीन वित्तीय सहायता प्रदान करके अपनी लचीलापन का प्रदर्शन किया है। नतीजतन, भारत में ग्राहकों में 52% की वृद्धि के साथ, यह मार्च से सितंबर तक बढ़ता रहा, और इसी अवधि के दौरान राजस्व में 101% की वृद्धि हुई। अफ्रीका के बाजारों में भी बराबर वृद्धि हुई। भारत और तंजानिया में स्थित 100 मिनीग्रिड के साथ, नाइजीरिया सहित अतिरिक्त अफ्रीकी बाजारों में निकट अवधि (नियर टर्म) विस्तार, 2018 के मध्य से 10 गुना से अधिक वृद्धि का प्रतिनिधित्व करतें हैं। मिनीग्रिड की औसत क्षमता 50 किलोवाट है, ऐसा प्रणाली का आकार जो अधिकांश अन्य ग्रामीण ऊर्जा सेवा प्रदाताओं की तुलना में काफी ज़्यादा बड़ा है और खुदरा (रीटेल) दुकानों, कारखानों, कृषि प्रसंस्करण और कोल्ड स्टोरेज, जल निस्पंदन (फिल्टरन) और स्कूलों, साथ ही घरों सहित छोटे व्यवसायों की एक श्रृंखला के लिए कई उत्पादक भारों को बिजली देने में सक्षम है।

कंपनी के बाजार अनुसंधान (मार्केट रिसर्च) के अनुसार, हस्क पावर के माइक्रो-एंटरप्राइज ग्राहकों ने मिनीग्रिड्स से जुड़ने पर, औसतन, मुनाफे में 33% की बढ़ोतरी देखी है। संस्था के CEO (सीईओ) और संस्थापक मनोज सिन्हा ने कहा, "अब हम प्रति सप्ताह कम से कम 2 नए मिनीग्रिड रोल आउट करने (बनाने और लगाने) में सक्षम हैं, जो उद्योग में सबसे तेज विकास दरों में से एक है। साथ ही इस आँकड़े को बेहतर करने के लिए अभी भी हमारे पास काफी स्कोप है।"वो आगे कहते हैं, ''100 मिनीग्रिड्स के साथ दुनिया की पहली व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य मिनीग्रिड कंपनी बनने के सात ही हम अगले 12 महीनों में अपने मिनीग्रिड बेड़े को दोगुना (200) करने की ओर बढ़ रहे हैं। यह 500,000 सूक्ष्म-उद्यम ग्राहकों की सेवा करने वाले 5,000 मिनीग्रिड साइटों तक पहुंचने के हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप है।''

हस्क पावर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के चेयरमैन ब्रैड मैटसन कहते हैं, "हस्क पावर दिखा रहा है कि मिनीग्रिड सेक्टर का क्या पैमाना है और कंपनी को 2021 में एक और सफलता वर्ष के लिए स्थापित कर रहा है जिसमें हम परिचालन लाभप्रदता प्राप्त करने की योजना बनाते हैं।

जलवायु परिवर्तन पर धीमी गति से हो रहे कार्यों से संयुक्त राष्ट्र के पूर्व सदस्य नाखुश

एजेंसियां

यूएनएफसीसी के पूर्व सदस्यों ने 30 साल के अंतर्राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन वार्ताओं का जायजा लिया, उन्होंने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इस साल 21 दिसंबर को जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता (इंटरनेशनल नेगोटिएशन ऑन क्लाइमेट चेंज) की शुरूआत की 30 वीं वर्षगांठ थी। संयुक्त राष्ट्र महासभा का प्रस्ताव 45/212 जो वर्तमान मानव जाति और भावी पीढ़ियों के लिए वैश्विक जलवायु संरक्षण, जलवायु परिवर्तन पर एक प्रभावी शुरुआत थी। यह इस बारे में बताता है कि जलवायु परिवर्तन अब केवल वैज्ञानिकों और कार्यकर्ताओं का एक छोटा सा सम्मेलन या 'सिर्फ' मुद्दा ही नहीं है। बल्कि यह वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक महत्व का मुद्दा बन गया है, जिसके लिए अंतरराष्ट्रीय समझौते की आवश्यकता होती है।

जलवायु परिवर्तन अब केवल वैज्ञानिकों और कार्यकर्ताओं का एक छोटा सा सम्मेलन या 'सिर्फ' मुद्दा ही नहीं है। बल्कि यह वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक महत्व का मुद्दा बन गया है, जिसके लिए अंतरराष्ट्रीय समझौते की आवश्यकता होती है।

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसी) 1992 को अपनाया गया था और 1994 में 197 देशों ने लागू किया था। इसने मानव गतिविधि के कारण जलवायु परिवर्तन के संभावित खतरनाक प्रभाव को मान्यता दी थी। इसमें कहा गया कि विकसित देशों को इससे निपटने के लिए मुख्य भूमिका निभानी होगी। विकसित देशों के लिए 2000 तक 1990 के स्तर पर उत्सर्जन को लाने का पहला लक्ष्य निर्धारित किया गया था। सभी देशों के लिए उनके राष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं के बारे में जानकारी और संचार करने के लिए एक प्रणाली की शुरुआत की।

संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसी) सचिवालय के चार पूर्व सदस्यों ने कहा है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए दुनिया भर के प्रयास नाकाफी है, इसी तरह चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं है जब हम बेहद गंभीर खतरे में होंगे। टीम ने 30 साल पहले शुरू हुए जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता के बाद हुए बदलावों के बारे में पता लगाया। टीम ने कहा जबकि सदस्य देशों ने तीन दशकों में संयुक्त राष्ट्र की तीन संधियों पर सहमति व्यक्त की थी, दुनिया भर के देश उनके कार्यान्वयन में विफल हो रहे हैं। यदि जलवायु परिवर्तन के खतरनाक प्रभावों से बचना है तो कार्रवाई को तत्काल तेज करना होगा। तापमान वृद्धि जिस पर सभी देश सहमत हुए थे उसे सीमा के भीतर रखना होगा। यह समीक्षा क्लाइमेट पॉलिसी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई है।

यूएनएफसीसी के पूर्व सदस्यों ने कहा कि सरकारों द्वारा सहमति व्यक्त किए गए नियमों को प्रभावी तरीके से लागू किया जाना चाहिए। सदस्य देशों को ठोस रणनीतियां और कार्रवाई द्वारा ऐसे नए लक्ष्य, जिन्हें की हासिल किया जा सके उन्हें स्थापित करने का सुझाव देते हैं।

यूएनएफसीसी ने निम्नलिखित पर जोर दिया

- अंतर्राष्ट्रीय कानून बनाना और नियम और मानक स्थापित करना
- वैश्विक रूप से सहमत लक्ष्यों को स्थापित करना
- आंकड़ो को सदस्य देशो के साथ बांटना,
- पारदर्शिता को बढ़ावा देना और जवाबदेही को प्रोत्साहित करना जागरूकता और सीखने को बढ़ावा देना
- कार्यान्वयन और सहायता के साधनों के प्रावधान की सुविधा
- हितधारकों का निर्माण

United Nations Framework Convention on Climate Change

यूएनएफसीसी की टीम ने कई सिफारिशें की उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

सरकारों ने जो वायदे किए है उनको पूरा करने के लिए सभी तरीकों से घरेलू स्तर पर कार्य करना

सबसे बड़े उत्सर्जक और सबसे अमीर देशों को सबसे अधिक जिम्मेदारी वहन करनी चाहिए व्यापार और वित्त क्षेत्रों, सरकारों, और अन्य नागरिक समाज द्वारा एक साथ कार्रवाई करना

टैक्स और इको-टैरिफ जीवाश्म ईंधन से सब्सिडी को हटाने और कोयले को चरणबद्ध तरीके से कम करने के लिए, खाली बोलने के बजाय वास्तविक कार्रवाई करने के लिए एक विशिष्ट रणनीति बनाना। 2030 तक अंतरिम लक्ष्य रखना जिसमें तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा पर रोकना

यूएनएफसीसी के रिचर्ड किनले ने कहा कि इससे पहले कि जलवायु परिवर्तन के खतरनाक परिणाम हो, इसपर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए, हमें वर्तमान जलवायु परिवर्तन से संबंधित खतरों को दूर करने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए पहले से ही सहमत वादों का पूरी तरह लागू किया जाना चाहिए। यदि हमें 30 वर्षों में दुनिया भर के उत्सर्जन को नेट जीरो करना है तो सरकारी और कॉर्पोरेट कार्रवाई को प्रभावी बनाना होगा।

क्रिस्टियाना फिगरिस बताती है कि पेरिस समझौते के राष्ट्रीय जलवायु के तहत किए गए वादे, राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित कार्यों की एक बहुत बड़ी शुरुआत थी, लेकिन उन्हें वर्तमान दौर के हिसाब से अपडेट करना महत्वपूर्ण है, यदि वैश्विक लक्ष्यों को हासिल करना है तो फिर निर्णायक तरीके से लागू किया जाना आवश्यक है। क्रिस्टियाना फिगरिस पेरिस समझौते के समय संयुक्त राष्ट्र जलवायु प्रमुख थीं।

यूएनएफसीसी के सदस्यों ने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए एक रणनीति की आवश्यकता है कि हम 2030 के अंतरिम लक्ष्य को हासिल करें, जिसमें तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा पर रोकना, 2030 तक शुद्ध सीओ2 उत्सर्जन में कमी लाना है।

E ZONE CARE

Software Problem, Motherboard Chip-Level Repair, Laptop AC Adapter Repair and Replacement, Laptop LCD Screens Repair and Replacement, Dead Laptop Problems, No Display Problem, LCD Dim Display Problem, LCD White Display Problem, BIOS Password Problem, all type of Laptop repair and service

● **Repair your laptop with 3-month warranty.**

info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, Ranchi 93108 96575, 70047 69511
Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm
SUNDAY CLOSED

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मनोरंजन सिंह द्वारा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2,रातू रोड, रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादक: एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : JHAHIN/2019/78094, email:greenrevolt2019@gmail.com. ☎ 0651-2283018, 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।